DSE-01

ORIGIN OF THEORIES OF RELIGION-TYLOR

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

धर्म का प्रादुर्भाव

धर्म कैसे शुरू हुआ?
धर्म कैसे विकसित हुआ?
यह विकासवादी चिन्तन डार्विन के विकासवाद सिद्धांत से प्रभावित था।

आत्मवाद (टायलर)

आत्मवाद के अनुसार आत्मा की धारणा धर्म के मूल में है अर्थात् आत्माओं में विश्वास। इसीलिए इसका नाम आत्मवाद है। टायलर के अनुसार आदिम आत्मा के विचार को गलती से अपनाता था। आत्मा का विचार मनुष्यों के सामान्य जीवन की जाग्रत और सुप्त दो अवस्थाओं के दृश्यों के विषय में भ्रामक ज्ञान उत्पन्न हुआ है। आदिम मनुष्य स्वप्न में दिखाई देने वाले दृश्यों को जाग्रत अवस्था में दिखाई देने वाले तथ्यों के समान ही सत्य और महत्वपूर्ण समझता है।

अत: व्यक्ति को यह अनुभव होने लगा कि व्यक्ति के शरीर में दो आत्मा है। एक सोते समय शयन स्थान पर विद्यमान रहता है, और एक शरीर को छोड़कर बाहर विचरण करता है। शरीर से पृथक शून्य में स्वतन्त्र विचरण करने वाली यह आत्मा ही पूर्वात्मा या सामान्य शब्दों में ये प्रेतात्मा बन जाती है।

अतः आदिम मनुष्य प्रत्येक घटना की व्याख्या इन प्रेतात्माओं के आधार पर करता है। बीमारी, पागलपन इत्यादि सभी प्रेतात्माओं का फल मान लिया जाता है। इस प्रकार मनुष्य के द्वारा प्रेतात्माओं को प्रसन्न करने के लिए की पूजा करने लगे जबकि आत्मा अमूर्त होती है और मनुष्य के द्वारा आत्मा में शक्ति का विश्वास मानकर पूर्वजों की पूजा करना आरम्भ कर देते हैं।

आत्मवाद की विशेषताएं

आत्मवाद अपने आप में कर्म नहीं है। यह तो एक आदर्श प्रारूप है जिसे द्‍वारा धर्म के उद्‍विकास का अध्ययन किया जाता है।

आत्मवाद में जीवात्मा की अवधारणा है। जीवात्मा वह है जो जीवित व्यक्तियों के शरीर में निवास करती है। मृत्यु के पश्चात् या शरीर नष्ट हो जाने के बाद भी जीवात्मा बनी रहती है।

प्रेतात्मा और जीवात्मा दोनों अलौकिक शक्ति के रूप है और इन्हे पेड़-पौधों, पत्थर इत्यादि में देखा जा सकता है।

मनुष्य प्रकृति के साथ होने वाले अपने संघर्ष में जीवात्मा की पूजा करके सुरक्षित रहना चाहता है।